JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी काव्य में अस्तित्ववाद का प्रभाव अज्ञेय एवं मोहन राकेश के संदर्भ में

अरुण स्वामी रिसर्च फैलो,
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर राजस्थान
शोध निर्देशिका डॉ शालिनी मूलचंदानी

सारांश

अस्तित्ववाद पश्चिमी जगत की देन है हिंदी साहित्य पर अस्तित्ववाद का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है सर्वप्रथम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन आगे की रचना देखने को मिलता है इस तरह अपुन का आभास हो जाता है की आजादी से पूर्व अभी अस्तित्ववाद का हमारे साहित्य पर अमित प्रभाव दिखाई पड़ रहा था। दूसरे महायुद्ध के पूर्व और पश्चिम इस विचारधारा ने औद्योगिक संस्कृति के विकास के परिणाम स्वरूप यह निराशा आत्म पीड़ा कुंठा सत्रांस और दिशाहीन मानसिकता को जन्म दिया साहित्य में अस्तित्ववाद की अवधारणा मानवीय यथार्थ और परिस्थिति के विश्लेषण से आरंभ होती हैअज्ञेय ने अस्तित्व के चिंतन का जो स्वरूप अपनी रचनाओं में दिखाया है उस पर केवल पश्चिम जगत के अस्तित्ववाद की विचारधारा से प्रेरित होकर नहीं लिखे बल्कि मानव की मूल आवश्यकताओं के लिए अपने हृदय में उत्पन्न विचारों के अनुसार की इनकी रचनाओं में जीवन का मूल स्वर छिपा है। इन्होंने मनुष्य तक मूल स्वरूप तक पहुँचाने का प्रयास किया दूसरी तरफ महान कहानीकार राकेश की रचना 'आषाढ़ का एक दिन मैं कालिदास की निराशा एवं स्वतंत्रता चयन के अनुसार नहीं बल्कि आर्थिक असमानता के अनुसार उनका राज्याभिषेक की ओर बढ़ना इत्यादि के संदर्भ में हम अस्तित्ववाद का अवलोकन कर सकते हैं । अस्तित्ववाद का प्रमुख उद्देश्य मानव को उसके अस्तित्व के प्रश्नों से परिचित करा कर अलगाव से मुक्त कराना है।

प्रस्तावना

अस्तित्ववाद लेखन का एक नई दर्शन के रूप में हमारे सामने उभरता है हालांकि अस्तित्ववाद की अवधारणा पश्चिमी जगत की देन है **कीर्केगार्ड** ने 1843 ईसवी में अवधारणा को जन्म दिया। अस्तित्ववाद को प्रतिष्ठित एवं साहित्य ख्याति तक लाने का श्रेय फ्रांसीसी विचारक सात्र को प्राप्त है ।

सात्र ने अस्तित्ववाद को नया नैतिक धरातल प्रदान किया उसने स्वतंत्रता के प्रश्न को एक मानवीय प्रश्न बनाया उस प्रश्न को समाज के संगठनात्मक ढाँचे के भीतर बिठाने का प्रयत्न किया।**सात्र** मनुष्य की इयता को ही अस्तित्व का केंद्र बिंदु मानता है वह वर्तमान विघटन कार्य परिस्थितियों के लिए औद्योगिक सभ्यता को उत्तरदाई ठहराते हैं। अस्तित्ववाद पर लिखी गई प्रमुख पुस्तकें निम्न है सन 1964 ईस्वी में **शिव प्रसाद सिंह** ने **धर्म युग** नामक रचना की जिसमें अस्तित्ववाद दर्शन के संदर्भ में लिखा।

डॉ गणपति चंद्रगुप्त ने पीड़ा को ही अस्तित्व की आधारशिला माना वहीं **डॉ शशि भूषण सिंह** ने अस्तित्ववाद का स्वरूप बताते हुए अनुभूति और चेतना को इसका स्वरूप माना। **डॉक्टर लक्ष्मीकांत सिन्हा** ने इसे घोर व्यक्तिवादी

दर्शन माना।वहीं **डॉक्टर लक्ष्मीकांत शर्मा** के मतानुसार अस्तित्ववाद सत्य अनुभूतियों से उठने वाले जिज्ञासाओं से निर्मित होता है।

सन 1968 में **महावीर दाधीच** ने अस्तित्ववाद शिक्षक नाम से पुस्तक लिखी जिसमें अस्तित्ववाद की सभी पक्षों का वर्णन किया ।सन 1973 में **कुबेरनाथ राय** ने **विषाद योग** नामक पुस्तक अस्तित्ववाद पर लिखी ।विभिन्न विद्वानों ने अस्तित्ववाद की अनेक परिभाषा को अपने शब्दों में पिरोया है **डॉ श्याम सुंदर मिश्र** के अनुसार ष्अस्तित्ववाद आदि नूतन जीवन के विभिन्न क्षेत्रों और वैज्ञानिक उपलब्धियों यांत्रिकता के बीच आकुल चिंता का वैज्ञानिक और समीचीन विश्लेषण है।

इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार अस्तित्ववाद मनुष्य को भावात्मक जीवन का वर्णन नहीं होता इसमें मनुष्य को समग्र रूप से देखा जाता है। अस्तित्ववाद मनुष्य जीवन में क्षण क्षण में जिंदा रहता है।

अगर हम कहें अस्तित्ववाद मानव के प्रश्नों से परिचित करा कर उसे अलगाव से मुक्त करना है ।आज के जनमानस में अलगाव की भावना गहरी बनती जा रही है मनुष्य भटक गया है डर अनेक भावना इत्यादि से पीड़ित हो गया हैं।

आधुनिक गद्य साहित्य में अज्ञेय की रचना **शेखर** एक हिंदी का प्रथम अस्तित्ववाद उपन्यास कहा जा सकता है । शेखर एक जीवनी का प्रकाशन 1940 ईस्वी में हुआ इसका दूसरा भाग 1944 में प्रकाशित हुआ। इसके पहले भाग का प्रकाशन आजादी से पूर्व हो चुका था यह उपन्यास जीवन मृत्यु की समस्या की नींव पर रखा गया क्योंकि अज्ञेय जी ने गोमती नदी में आई बाढ़ और उसकी भयंकर दुर्दशा अपनी आँखों से देखा।इसके बाद अस्तित्ववाद के प्रति उनका लगाव बढ़ने लगा उन्होंने **एक बूँद सहसा उछली** मैं लिखा है कीर्केगार्ड का अस्तित्ववाद मेरे लिए आकर्षक नहीं रहा। अज्ञेय पूर्णता मानवतावादी रचनाकार रहे हैं।अज्ञेय के सभी मान्यताओं और विचारों का मानदंड मानव ही रहा है ।अज्ञेय की यही व्यक्तिवादी दृष्टि अस्तित्ववाद की देन है। भारतीय राष्ट्रवाद में अज्ञेय जैसा विचारक नहीं हुआ है। शेखर के माध्यम से उन्होंने दुख और वेदना को दिखाया। अज्ञेय एक महानी दार्शनिक बने।

अज्ञेय भारतीय विचारकों में अपना अनूठा स्थान रखते हैं। उन्होंने **शेखर एक जीवनी नदी के द्वीप** और अपने अजनबी में परंपरा मुक्त अनुभवों मूल्य को विश्लेषण किया है।वे आधुनिकरण के अधिक हिमायती हैं बौद्धिकता से पूर्ण एक मनोवैज्ञानिक थे।उनकी रचना प्रक्रिया कृतित्व बहुमुखी है यह तो उनके समृद्ध अनुभव की सहज परिणिति है ।इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह कि वह सतत विकासशील है क्योंकि वह निरंतर स्वयं को तोड़ता चलता है अपने को और व्यापक संदर्भों से जोड़ता चलता है।

निष्कर्ष ।

अज्ञेय ने भारतीय संस्कृति के मृत्यु संबंधी विचारों तथा दाह संस्कार आदि के माध्यम से भी जीवन और सृष्टि की अनव्रतता का दर्शन प्रस्तुत किया है।उनकी रचना में व्यक्ति भारतीय चिंतन में मृत्यु को जीवन का अंत नहीं बल्कि नित्य प्रवाह के रूप में समझ सकता है एवं अपने जीवन को सुखी बना सकता है ।यहाँ अज्ञेय ने स्वतंत्रता की सीमा की ओर हमारा ध्यान खींचा है ।अज्ञेय ने मानव की इस बेबसी की अभिव्यक्ति दी । अस्तित्ववाद ने मनुष्य को जीवन जीने के लिए एक नया स्वरूप प्रदान किया है दूसरी तरफ मोहन राकेश ने आषाढ़ का एक दिन में कालिदास के के माध्यम से सत्ता एवं सृजनात्मकता के मध्य अंतर संघर्ष का चित्र अंकित किया है अज्ञेय के शब्दों का सहारा लूँ तो'नहीं कुछ मेरा मैं तो डूब गया था स्वयं सुनने में वीणा के माध्यम से अपने को मैंने सब कुछ सौप दिया था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सं. डॉ. धीरेंद्र वर्मा, हिंदी साहित्य कोश, भाग–1 पृष्ठ संख्या 73

2. डी डी रयून्स, द डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी, पृष्ठ संख्या 102

3. डॉ कृष्णा दत्त पालीवाल, हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार, पृष्ठ संख्या 383

4. डॉ. एम. शण्मुखन,आधुनिक हिंदी उपन्यासों पर अस्तित्ववाद का प्रभाव पृष्ठ संख्या 355

5. डॉ.राम स्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य की अधुनातन प्रवृत्तियाँ, पृष्ठ संख्या 05

6. अज्ञेय, एक बूंद सहसा उछली, पृष्ठ संख्या 70

7. अज्ञेय, नदी के द्वीप, पृष्ठ संख्या 07